५. (अ) गुरुबानी

– गुरु नानक

कवि परिचय : गुरु नानक जी का जन्म १५ अप्रैल १४६९ को रावी नदी के किनारे तलवंडी नामक ग्राम में हुआ । बचपन से ही आपका झुकाव आध्यात्मिक चिंतन और सत्संग की ओर रहा । आपके व्यक्तित्व में दार्शनिक, योगी, गृहस्थ, धर्मसुधारक, समाज सुधारक और कवि के गुण पाए जाते हैं । आप सर्वेश्वरवादी हैं और सभी धर्मों-वर्गों को समान दृष्टि से देखते हैं । आपने विश्वबंधुत्व के विचार की पुष्टि की है । आपके भावुक और कोमल हृदय ने प्रकृति से एकात्म होकर जो अभिव्यक्ति की है, वह अनूठी है । आपकी काव्यभाषा में फारसी, मुल्तानी, पंजाबी, सिंधी, खड़ी बोली और अरबी भाषा के शब्द समाए हुए हैं । सहज-सरल भाषा द्वारा अपनी बात कहने में आप सिद्धहस्त हैं । आपका निधन १५३९ में हुआ ।

प्रमुख कृतियाँ : 'गुरुग्रंथसाहिब' आदि ।

विधा परिचय : 'पद' काव्य रचना की एक गेय शैली है । इसके विकास का मूल स्रोत लोकगीतों की परंपरा ही माना जा सकता है । हिंदी पद शैली में विभिन्न छंदों का प्रयोग अनेक निश्चित रूपों में हुआ है । हिंदी साहित्य में 'पद शैली' की दो निश्चित परंपराएँ मिलती हैं – एक संतों की 'सबद' और दूसरी 'कृष्णभक्तों' की परंपरा ।

पाठ परिचय : प्रस्तुत दोहों तथा पदों में गुरु नानक ने गुरु की महिमा, कर्म की महानता, सच्ची शिक्षा आदि विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए हैं । मनुष्य के जीवन को उदात्त और चरित्रवान बनाने में गुरु का मार्गदर्शन, मनुष्य के उत्तम कार्य और सच्ची शिक्षा का बहुत बड़ा योगदान रहता है । गुरु द्वारा दिया जाने वाला ज्ञान ही शिष्य की सबसे बड़ी पूँजी है । संसार मनुष्य की जाति का नहीं अपितु उसके उत्तम कर्मों का सम्मान करता है । मनुष्य का श्रेष्ठत्व उसके अच्छे कर्मों से सिद्ध होता है न कि उसकी जाति अथवा वर्ग से । गुरु नानक ने कर्मकांड और बाह्याडंबर का घोर विरोध किया ।

नानक गुरू न चेतनी मनि आपणै सुचेत ।
छुटे तिल बूआड़ जिऊ सुंञे अंदरि खेत ।।
खेतै अंदरि छुटिआ कहु नानक सउ नाह ।
फलीअहि फुलीअहि बपुड़े भी तन विच सुआह ।। १ ।।

जालि मोहु घसि मसु करि,
मति कागदु करि सारु,
भाउ कलम करि चितु, लेखारी,
गुर पुछि लिखु बीचारू,
लिखु नामु सालाह लिखु,
लिखु अंतु न पारावारू ।। २ ।।

मन रे अहिनिसि हरि गुण सारि ।
जिन खिनु पलु नामु न वीसरै ते जन विरले संसारि ।
जोती जोति मिलाईए, सुरती सुरति संजोगु ।
हिंसा हउमै गतु गए नाही सहसा सोगु ।
गुरमुखि जिसु हरि मनि वसै तिसु मेले गुरू संजोगु ।। ३ ।।

तेरी गति मिति तूहै जाणहि किआ को आखि वखाणै
तू आपे गुपता, आपे प्रगटु, आपे सभि रंग माणे
साधिक सिध, गुरू वहु चेले खोजत फिरहि फुरमाणे
मागहि नामु पाइ इह भिखिआ तेरे दरसन कउ कुरबाणे
अबिनासी प्रभु खेलु रचाइआ, गुरमुखि सोझी होई ।
नानक सभि जुग आपे वरतै, दूजा अवरु न कोई ।। ४ ।।

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने ।
तारिका मंडल जनक मोती ।
धूपु मलआनल, पवणु चवरो करे,
सगल वनराइ फूलंत जोती ।
कैसी आरती होई भव खंडना, तेरी आरती ।
अनहता सबद वाजंत भेरी ।। ५ ।।

– ('गुरू ग्रंथ साहिब' से)

— o —

शब्दार्थ

बूआड़ = बुआई करना
सउ = ईश्वर
चितु = चित्त
गुपता = अप्रकट, गुप्त
सगल = संपूर्ण
सुंञे = सूने
मसु = स्याही
अहिनिसि = दिन-रात
जुग = युग
भेरी = बड़ा ढोल

आकलन

१. (अ) संजाल पूर्ण कीजिए :–

नाम स्तुति के लिए ये आवश्यक हैं

(आ) कृति पूर्ण कीजिए :–

(१) आकाश के दीप → ..... / .....

शब्द संपदा

२. लिखिए :–

प्रत्यययुक्त शब्द

दान → ☐ | दया → ☐ | गुण → ☐ | अंतर → ☐

अभिव्यक्ति

३. (अ) 'गुरु बिन ज्ञान न होई' उक्ति पर अपने विचार लिखिए।

(आ) 'ईश्वर भक्ति में नामस्मरण का महत्त्व होता है', इस विषय पर अपना मंतव्य लिखिए।

रसास्वादन

४. 'गुरुनिष्ठा और भक्तिभाव से ही मानव श्रेष्ठ बनता है' इस कथन के आधार पर कविता का रसास्वादन कीजिए।

साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान

५. (अ) गुरु नानक जी की रचनाओं के नाम :

.....

(आ) गुरु नानक जी की भाषाशैली की विशेषताएँ :

.....

.....

६. निम्नलिखित वाक्यों में अधोरेखांकित शब्दों का वचन परिवर्तन करके वाक्य फिर से लिखिए :

(१) सत्य का मार्ग सरल है ।

.....

(२) हथकड़ियाँ लगाकर अकबर बादशाह के दरबार को ले चले ।

.....

(३) चप्पे-चप्पे पर काँटों की झाड़ियाँ हैं ।

.....

(४) सुकरात के लिए यह जहर का प्याला है ।

.....

(५) रूढ़ि स्थिर है, परंपरा निरंतर गतिशील है ।

.....

(६) उनकी समस्त खूबियों-कमियों के साथ स्वीकार कर अपना लें ।

.....

(७) वे तो रुपये सहजने में व्यस्त थे ।

.....

(८) ओजोन विघटन के खतरे क्या-क्या हैं ?

.....

(९) शब्द में अर्थ छुपा होता है ।

.....

(१०) अभी से उसे ऐसा कोई कदम नहीं उठाना चाहिए ।

.....

(आ) वृंद के दोहे

– वृंद

कवि परिचय : माना जाता है कि कवि वृंद जी का जन्म १६४३ को मथुरा में हुआ । रीतिकालीन परंपरा के अंतर्गत आपका नाम आदर के साथ लिया जाता है । आपका पूरा नाम 'वृंदावनदास' है । आपकी रचनाएँ रीतिबद्ध परंपरा में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं । आपने काव्य के विविध प्रकारों में रचनाएँ रची हैं । 'बारहमासा' में बारह महीनों का सुंदर चित्रण किया है तो 'यमक सतसई' में विविध प्रकार से यमक अलंकार का स्वरूप स्पष्ट किया है । आपके नीतिपरक दोहे जनसाधारण में बहुत प्रसिद्ध हैं और लोकव्यवहार में अनुकरणीय हैं । आपकी भाषा सहज-सुंदर तथा लोकभाषा से जुड़ी हुई है । आपकी भाषा में ब्रज तथा अवधी भाषा के शब्दों की बहुलता देखी जाती है । आपके द्वारा दिए गए दृष्टांत आपकी भाषा के साथ-साथ भाव और कथ्य को भी प्रभावोत्पादक बना देते हैं । आपका निधन १७२३ में हुआ ।

प्रमुख कृतियाँ : 'वृंद सतसई', 'समेत शिखर छंद', 'भाव पंचाशिका', 'पवन पचीसी', 'हितोपदेश संधि', 'यमक सतसई' 'वचनिका', 'सत्यस्वरूप' आदि ।

विधा परिचय : रीतिकालीन काव्य परंपरा में दोहा छंद का अपना विशिष्ट स्थान है । दोहा छंद कई कवियों का प्रिय छंद रहा है । दोहा अर्द्धसम मात्रिक छंद है । दोहे के प्रत्येक चरण के अंत में लघुवर्ण आता है । इसके चार चरण होते हैं । प्रथम और तृतीय चरण में १३-१३ मात्राएँ होती हैं तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में ११-११ मात्राएँ होती हैं ।

पाठ परिचय : प्रस्तुत दोहों में कवि वृंद ने कई नीतिपरक बातों की सीख दी है । विद्या रूपी धन की विशेषता यह होती है कि वह खर्च करने पर भी बढ़ता जाता है । आँखें मन की सच-झूठ बातें बता देती हैं । जितनी चादर हो, मनुष्य को उतने ही पाँव फैलाने चाहिए । व्यवहार में कपट को स्थान नहीं देना चाहिए । बिना गुणों के मनुष्य को बड़प्पन नहीं मिलता । दुष्ट व्यक्ति से उलझने पर कीचड़ हमपर ही उड़ता है । संसार में सद्गुणों के कारण ही व्यक्ति को आदर प्राप्त होता है । कवि वृंद के दोहे पाठकों को व्यावहारिक अनुभवों से परिचित कराते हैं, जीवन का सच्चा मार्ग दिखाते हैं ।

सरसुति के भंडार की, बड़ी अपूरब बात ।
ज्यौं खरचै त्यौं-त्यौं बढ़ै, बिन खरचे घटि जात ।।

नैना देत बताय सब, हिय को हेत-अहेत ।
जैसे निरमल आरसी, भली बुरी कहि देत ।।

अपनी पहुँच बिचारि कै, करतब करिए दौर ।
तेते पाँव पसारिए, जेती लाँबी सौर ।।

फेर न ह्वै हैं कपट सों, जो कीजै ब्यौपार ।
जैसे हाँड़ी काठ की, चढ़ै न दूजी बार ।।

ऊँचे बैठे ना लहैं, गुन बिन बड़पन कोइ ।
बैठो देवल सिखर पर, वायस गरुड़ न होइ ।।

उद्‌यम कबहुँ न छाँड़िए, पर आसा के मोद ।
गागरि कैसे फोरिए, उनयो देखि पयोद ।।

कछु कहि नीच न छेड़िए, भलो न वाको संग ।
पाथर डारै कीच मैं, उछरि बिगारै अंग ।।

जो पावै अति उच्च पद, ताको पतन निदान ।
ज्यौं तपि-तपि मध्याह्न लौं, अस्त होतु है भान ।।

जो जाको गुन जानही, सो तिहि आदर देत ।
कोकिल अंबहि लेत है, काग निबौरी लेत ।।

आप अकारज आपनो, करत कुबुध के साथ ।
पाय कुल्हाड़ी आपने, मारत मूरख हाथ ।।

कुल कपूत जान्यो परै, लखि सुभ लच्छन गात ।
होनहार बिरवान के, होत चीकने पात ।।

– ('वृंद सतसई' संग्रह से)

— o —

शब्दार्थ

सरसुति = सरस्वती, विद्‌या की देवी
सौर = चादर
लहैं = लेना
उद्‌यम = प्रयत्न
पाथर = पत्थर
अंबहि = आम
करतब = कार्य
काठ = लकड़ी
वायस = कौआ
पयोद = बादल
तिहि = उसे
निबौरी = नीम का फल

स्वाध्याय

आकलन

१. (अ) कारण लिखिए :

(१) सरस्वती के भंडार को अपूर्व कहा गया है :- .....

.....

(२) व्यापार में दूसरी बार छल-कपट करना असंभव होता है :- .....

.....

(आ) सहसंबंध जोड़िए :-

(१) ऊँचे बैठे ना लहैं, गुन बिन बड़पन कोइ	(१) काग निबौरी लेत
(२) कोकिल अंबहि लेत है ।	(२) बैठो देवल सिखर पर, वायस गरुड़ न होइ ।

शब्द संपदा

२. निम्नलिखित शब्दों के लिए विलोम शब्द लिखिए :

(१) आदर - ..... (२) अस्त - .....

(३) कपूत - ..... (४) पतन - .....

अभिव्यक्ति

३. (अ) 'चादर देखकर पैर फैलाना बुद्धिमानी कहलाती है', इस विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

(आ) 'ज्ञान की पूँजी बढ़ानी चाहिए', इस विषय पर अपने विचार लिखिए ।

रसास्वादन

४. जीवन के अनुभवों और वास्तविकता से परिचित कराने वाले वृंद जी के दोहों का रसास्वादन कीजिए ।

साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान

५. (अ) वृंद जी की प्रमुख रचनाएँ –

(आ) दोहा छंद की विशेषता –

अलंकार

जिस प्रकार स्वर्ण आदि के आभूषणों से शरीर की शोभा बढ़ती है उसी प्रकार जिन साधनों से काव्य की सुंदरता में वृद्धि होती है; वहाँ अलंकार की उत्पत्ति होती है ।

मुख्य रूप से अलंकार के तीन भेद हैं – शब्दालंकार, अर्थालंकार , उभयालंकार

ग्यारहवीं कक्षा की युवकभारती पाठ्यपुस्तक में हमने 'शब्दालंकार' का अध्ययन किया है । यहाँ हम अर्थालंकार का अध्ययन करेंगे ।

अर्थालंकार

रूपक | उपमा | उत्प्रेक्षा | अतिशयोक्ति | दृष्टांत

रूपक : जहाँ प्रस्तुत अथवा उपमेय पर उपमान अर्थात अप्रस्तुत का आरोप होता है अथवा उपमेय या उपमान को एकरूप मान लिया जाता है; वहाँ रूपक अलंकार होता है अर्थात एक वस्तु के साथ दूसरी वस्तु को इस प्रकार रखना कि दोनों अभिन्न मालूम हों, दोनों में अंतर दिखाई न पड़े ।

उदा. – (१) उधो, मेरा हृदयतल था एक उद्यान न्यारा ।
शोभा देतीं अमित उसमें कल्पना-क्यारियाँ भी ।।

(२) पायो जी मैंने राम रतन धन पायो ।

(३) चरण-सरोज पखारन लागा ।

(४) सिंधु-सेज पर धरा-वधू ।
अब तनिक संकुचित बैठी-सी ।।

उपमा : जहाँ पर किसी एक वस्तु की तुलना दूसरी लोक प्रसिद्ध वस्तु से रूप, रंग, गुण, धर्म या आकार के आधार पर की जाती हो; वहाँ उपमा अलंकार होता है अर्थात जहाँ उपमेय की तुलना उपमान से की जाए; वहाँ उपमा अलंकार उत्पन्न होता है ।

उदा. – (१) चरण-कमल-सम कोमल ।

(२) राधा-वदन चंद सो सुंदर ।

(३) जियु बिनु देह, नदी बिनु वारी ।
तैसे हि अनाथ, पुरुष बिनु नारी ।।

(४) ऊँची-नीची सड़क, बुढ़िया के कूबड़-सी ।
नंदनवन-सी फूल उठी, छोटी-सी कुटिया मेरी ।

(५) मोती की लड़ियों से सुंदर, झरते हैं झाग भरे निर्झर ।

(६) पीपर पात सरस मन डोला ।